International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 6 No. 40 September - October - 2025

जसिंता केरकेट्टा की कविताओं में संवेदनशीलता का चित्रण

डॉ. न. पु. काळे
सहा.प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
वसंतदादा पाटील महाविद्यालय,पाटोदा जि.बीड
Corresponding Author – डॉ. न. पु. काळे
DOI - 10.5281/zenodo.17656903

शोध सारांश :

जसिंता केरकेट्टा आज यथार्थवादी कवयित्री के रूप में सर्वदूर परिचित है I उनकी कविता की नींव समाज है, वह आधुनिकता के दौर में भी अपना गौरवशाली अतीत को खोना नहीं चाहती है Iजसिंता स्वयं कवयित्री के साथ साथ एक पत्रकार के रूप में भी अपना कर्तव्य का निर्वाहन कर रही है इस कारण उनकी कविता अपने हक़ के लिए व्यवस्था से सवाल उठाती है, वह समाज के हक़ के लिए व्यवस्था का खतरा उठाने का साहस करती है आज के इस दौर में जसिंता का यह साहित्यिक दायित्व का महत्व अनन्यअसाधारण रहा है I जसिंता की कविता मात्र ही व्यवस्था का विरोध नहीं करती है वह आगे बढ़ते हुए संवेदनशीलता को अपनाकर सामाजिक समता, मानवी मूल्य, जल,जीवन एवं जमीन की रक्षा के लिए पहल करती दिखाई देती है I जसिंता केरकेट्टा की कविताओं में संवेदनशीलता को अपनाया गया है I

मूल आलेख :

झारखंड के सामान्य गाँव में आदिवासी जन समूह में जन्मी पली बढ़ी जसिंता को उनके कार्य के लिए भारतवर्ष के साथ-साथ दुनियाभर में पहचाना जाता हैI मास कम्युनिकेशन की उपाधि प्राप्त कर उन्होंने पत्रकारिता के साथ ही लेखन कार्य को प्राथमिकता देकर अपने समूह की वेदना को स्वर देकर सामाजिक, प्रशाशनिक पटल पर लाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है I उनके पत्रकारिता कार्य के लिए एवं लेखन कार्य के लिए उन्हें कई महत्वपूर्ण पुरस्कारों से नवाज़ा गया है I 'ईश्वर और बाजार' काव्य संग्रह के लिए इंडिया टुडे द्वारा साहित्यिक पुरस्कार दिया गया है I वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आदिवासी जन समूह पर होते अन्याय, सरकार की उदासीनता के कारण कई पुरस्कारों को उन्होंने अस्वीकार किया है I जसिंता केरकेट्टा का व्यक्तित्व तथा कृतित्व मानवतावादी विचारधारा से प्रेरित रहा है I 'दृश्य अंगोर', 'जड़ो की भूमि', 'ईश्वर और बाजार', 'जसिंता की डायरी', 'प्रेम में पेड़ होना', 'जिरहुल' यह उनका रचना संसार रहा है I जसिंता की 'परवाह' कविता हमें अंतर्मुख कराती है I जसिंता माँ से सवाल करती है- एक बोझा लकड़ी के लिए जंगल में दिन भर माँ भाग दौड़ क्यों करती हो? इस पर माँ का जवाब है –

"जंगल छानती,
पहाड़ लाँघती,
दिन भर भटकती हूँ
सिर्फ़ सूखी लकड़ियों के लिए।
कहीं काट न दूँ कोई ज़िंदा पेड़!"

कोई पेड़ गलती से भी काट न दूँ ! जंगल में सुखी लकडिया बटोरनेवाली अनपढ़ माँ के पास वह संवेदनशीलता है जो विकास के नाम पर हो हल्ला मचाने वालों के पास नहीं है!

'मातृभाषा की मौत' इस कविता में माँ अपने बच्चों की परवरिश.घर परिवार की जिम्मेदारी में उलझी हुई है अपने पारिवारिक दायित्व के चक्कर में समाज उससे उसकी अपनी भाषा को छीन लेता है और मातृभाषा की मौत होती हैI जसिंता अपनी कविता में लिखती है-

"रोटियों के सपने
दिखाने वाली संभावनाओं के आगे
अपने बच्चों के लिए उसने
भींच लिए थे अपने दाँत
और उन निवालों के सपनों के नीचे
दब गई थी मातृभाषा।
माँ को लगता है आज भी
एक दुर्घटना थी
मातृभाषा की मौत।"[ii]

'उससे मेरा संबंध क्या था?' बड़ी महत्वपूर्ण कविता है जो हमें पर्यावरण के साथ ही मानवीय मूल्यों की नसीहत देती हुई दिखाई देती है I आज सरेआम गाँव-क़स्बा,शहर बड़े तेजी के साथ बदल रहें है I रस्ते चौड़े होते जा रहें है, ऊँची इमारतें आसमान को छु रही हैं I कम्पनियां,कारखाने बन रहें है I विकास का बोलबाला मच रहा हैं I समाज,परिवेश करवट बदल रहा हैं,इस सब गतिविधि में पेड़,पौधे,जल को क्षति पहुँच रही है I बड़े-बड़े पेड़ों को तोडा जा रहा हैI इस सब के बीच पर्यावरण के प्रति हमारा दायित्व हम भूल बैठे हैंI इस परिवेश में जसिंता की संवेदनशीलता 'उससे मेरा संबंध क्या था?' इस कविता में दिखाई देती है –

"वह आम का पेड़
कहाँ जा सकता है भला?
दूसरे दिन अख़बार में पढ़ी
उसके मारे जाने की ख़बर।

मैं आज तक दर-दर भटक रही हूँ
यही बताने के लिए
कि उसके साथ मेरा संबंध क्या था
मगर वहाँ कोई नहीं अब
ग़ायब हो चुका है सब
अब सिर्फ़ दूर-दूर तक धूल उड़ाती
चौड़ी सपाट सड़कें भर हैं...।"[iii]

आम के पेड़ के टूटने के कारण रचनाकार का दुःख एवं पेड़ के प्रति उनकी संवेदनशीलता का चित्रण इस कविता में किया गया है I 'नदी,पहाड़ और बाजार' इस कविता में भी बदलते प्राकृतिक मानदंडो को रेखांकित किया है I अगली पीढ़ी को हमारे पास देने के लिए अब क्या बचा है? नदी,खेत,खलिहान,बारिश,मिट्टी,पानी सब कुछ पूंजीवादी व्यवस्था ने आदिवासी जन जाती,सामान्य किसानों से छीन लिया है I विकास प्रक्रिया के कारण नदी भी गायब कर दी है! यह पीड़ा बड़ी भयावह हैंI प्राकृतिक धरोहर खत्म हो रही है, अगली पीढ़ी को यह सब पूंजीवादी व्यवस्था से खरीदना पड़ेगा यह डर रचनाकार की संवेदना की उजागर करता है I

"मैंने कहा, देख रही हो इसे?
यहीं थे कभी तुम्हारे पूर्वजों के खलिहान।
नन्ही पीढ़ी दौड़ी : हम आ गए बाज़ार!
क्या-क्या लेना है? पूछने लगा दुकानदार।
भैया! थोड़ी बारिश, थोड़ी गीली मिट्टी,
एक बोतल नदी, वो डिब्बाबंद पहाड़
उधर दीवार पर टँगी एक प्रकृति भी दे दो,
और ये बारिश इतनी महँगी क्यों?"

यह सब खरीदते समय नोट देते हुए नोट की जगह पर रचनाकार को हमारा वजूद मुड़ा पड़ा दिखाई देता है ! जसिंता की कविता पर क्रांतिनायक बिरसा मुंडा के विचारों का प्रभाव ही है जो जल,जमीन,जंगल को बचाने के लिए उनकी कविता के पात्र व्यवस्था से लोहा लेते हुए हमें दिखाई देते है I 'मेरे हाथों के हथियार' जसिंता की विद्रोही कविताओं में से एक है वें लिखती हैं

"हम लड़ रहे हैं
अपनी ज़मीन
और अपना वजूद बचाने के लिए
मेरे बाद तुम्हें भी लड़ना होगा।"
वर्षों बाद जाना मैंने
लेकर वह तीर कमान
घर लौटने के लिए तो
निकली नहीं थी।
आज मैं लड़ रहा हूँ
माँ के सपनों को बचाने के लिए।

अपनी जमीन,जल,जंगल बचाने के लिए आदिवासी, सामान्य जन सदियों से लढ रहें है I उनकी यह लढाई निजी स्वार्थ के लिए नहीं है वह अपनी प्राकृतिक धरोहर को बचाने ले लिए लढाई में उतरते है लेकिन लोगों को उनका मकसद दिखाई नहीं देता हैं, उन्हें तो बस व्यवस्था से लढने वालो के हथियार दिखाई देते है! यह दुःख भी कवयित्री ने जताया है I

आदिवासी महिलाओं पर कानून के रखवाले बड़ा जुल्म करते हैI उनकी असहायता का फायदा उठाया जाता है I वह वर्दी में छुपे नराधमो को कैसे मात दे सकती है भला ? वह कहाँ पर रपट लिखेगी और लिखे भी तो किसके खिलाफ़ ? और रपट लिखने वाले कैसे लिखेंगे ! वह सारी बातों को, जुल्म को ख़ारिज कर देंगे इसलिए जसिंता को लगता हैं अब हमें अपना दुःख, अपना जीवन,अपनी त्रासदी,पीडा को खुद ही लिखना होगा, जब हम अपनी पीड़ा को लिखेंगे तब साहब! कैसे करोगे ख़ारिज? यह सवाल वह उठाती हैI

"लिख देगी अपनी कविता में
कैसे तुम्हारे जंगल के रखवालों ने
तलाशी के नाम पर
खींचे उसके कपड़े,
कैसे दरवाज़े तोड़कर
घुस आती है
तुम्हारी फ़ौज उनके घरों में,
कैसे बच्चे थामने लगते हैं
गुल्ली-डंडे की जगह बंदूकें
और कैसे भर आता है
उसके कलेजे में बारूद।
साहेब!
एक दिन
जंगल की हर लड़की
लिखेगी कविता
क्या कहकर ख़ारिज करोगे उन्हें?
क्या कहोगे साहेब?
यही न
कि यह कविता नहीं
समाचार है!"[iv]

'जड़ो की जमीन' यह मार्मिक कविता है I कम से कम शब्दों में बहुत कुछ कहा जा सकता है इसका प्रमाण यह कविता हैI

"वे पेड़ों को बर्दाश्त नहीं करते
क्योंकि उनकी जड़ें ज़मीन माँगती हैं"

व्यवस्था से भविष्य में आनेवाले खतरें को सबसे पहले बुद्धिवादी भाप लेते है,और जैसे ही वह उस खतरें का विरोध करते है उन्हें मार दिया जाता है I उसकी सरेआम हत्या की जाती है क्योंकि फिर से लोई

व्यवस्था का विरोध करने का साहस न करें I प्रगतिशीलता के ढोल पीटने वाले हमारे भारतवर्ष में विचारकों की हत्या क्यों हुई है? मजे की बात यह है की कई अर्से बाद भी व्यवस्था को आज तक उनके हत्यारे मिल नहीं पाये है I हत्यारे क्यों नहीं मिले ? इसका जवाब ढूंढने को कोशिश होना जरुरी है I आदिवासी बहुलता क्षेत्र में नक्सलवादी करार देकर मारना बड़ी सहज बात हो गई है ! कहीं दाद न फरियाद ! इस स्थिति को केंद्र में रखकर जसिंता ने 'जनहित' कविता में व्यवस्था के इस रहस्य का पर्दाफाश किया है –

"मेरा पालतू कुत्ता
सिर्फ़ इसलिए मारा गया
क्योंकि ख़तरा देख वह भौंका था।
मारने से पहले उन्होंने
उसे घोषित किया पागल
और मुझे नक्सल—
जनहित में।"[v]

'अंगोर' कविता में गाँव एवं शहर की मनोदशा का बड़े सटीकता से चित्रण किया है I

"शहर का अंगार
जलता है, जलाता है
फिर राख हो जाता है।
गाँव के अंगोर
एक चूल्हे से
जाते हैं दूसरे चूल्हे तक
और सभी चूल्हे सुलग उठते हैं"

चूल्हे से चूल्हा जलना यह गाँव के लोग एक दुसरे को सहायता करते है इसका प्रमाण है I

"जसिंता की कविता आदिवासी दर्शन के सूक्ष्म पक्ष को उद्घाटित करने वाली कविता है। इसपर बात करना आज इसलिए अनिवार्य नहीं है कि इसके साथ आदिवासी अस्मिता के संकट का सवाल जुड़ा है बल्कि इसलिए है कि आदिवासी दर्शन मनुष्य मात्र के लिए आगे की राह दिखाने वाला दर्शन है। आदिवासी दर्शन मनुष्य को उसके अधिकारों की मांग करने के अलावा प्रकृति के प्रति दायित्व निर्वहन की सीख देता है।"[vi] जसिंता की कविता में आदिवासी जन समूह का जीवन यथार्थ,उनका संघर्ष का चित्रण किया गया है I जो समाज के प्रति उनके मन की संवेदनशीलता को उजागर करता है I जल,जमीन और जंगल को एवं मानवता को बचने ले लिए हम सब को आज आदिवासी बनने की आवश्कता है क्योंकि आदिवासी होने का अर्थ है मनुष्य होना ! उनके शब्दों में -

"धरती के करीब रहना ही आदिवासी होना है
प्रकृति के साथ चलना ही आदिवासी होना है
नदी की तरह बहना और सहज रहना ही आदिवासी होना है।"

निष्कर्ष :

जसिंता केरकेट्टा की कविता में आदिवासी विमर्श के दर्शन होते है I उनकी कविता आदिवासी जन जीवन का समस्त चित्रण करती है साथ ही उनकी कविता में मानवीय मूल्यों की रक्षा के लिए प्रयास दिखाई देता है I व्यवस्था के हर पहलु के प्रति जसिंता के काव्य में सजगता दिखाई देती है I जसिंता के काव्य में सामाजिक दायित्व भी दिखाई देता है I उन्होंने अपनी कविताओं में जन सामान्यों का चित्रण किया I अपनी पुरखो की जमीन,उनके वजूद को स्थापित एवं बरक़रार रखने के लिए जसिंता के काव्य में विद्रोह का स्वर भी प्रस्फूटित हुआ है जो व्यवस्था का नंगापन समाज के सामने रखता है I जसिंता की कविता में हक़ की बात करने पर व्यवस्था किस प्रकार भड़कती है इसका चित्रण किया है –

"अ से अनार लिखा

उन्होंने कहा

आह ! कितना सुंदर

आ से आम लिखा

उन्होंने आम के गुण गाए

जब अ से अधिकार लिखा

वे भड़क गए।"

जसिंता की कविता सामान्य लोगों को अधिकार प्राप्ति की मांग करती दिखाई देती है I हक़ के लिए वह प्रेरित करती है I जसिंता ने अपनी कविताओं में जन-सामान्यों का पक्ष लेकर उनके प्रति अपनी संवेदनशीलता को व्यक्त किया हैI

सन्दर्भ सूचि :

1. https://www.hindwi.org/kavita/parwah-jacinta-kerketta-kavita?sort=popularity-desc 29/8/25 को देखा गयाI
2. https://www.hindwi.org/kavita/matribhasha-ki-maut-jacinta-kerketta-kavita?sort=popularity-desc 29/8/25 को देखा गयाI
3. https://www.hindwi.org/kavita/usse-mera-sambandh-kya-tha-jacinta-kerketta-kavita?sort=popularity-desc 29/8/25 को देखा गयाI
4. https://www.hindwi.org/kavita/saheb-kaise-karoge-kharij-jacinta-kerketta-kavita?sort=popularity-desc 30/8/25 को देखा गयाI
5. https://www.hindwi.org/kavita/janhit-mein-jacinta-kerketta-kavita?sort=popularity-desc
6. 30/8/25 को देखा गयाI
7. https://www.apnimaati.com/2024/12/blog-post_529.html 30/8/25 को देखा गयाI